Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

10-4

# शान्ति संगीत

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

ग्रन्थालय
दी, वाराणसी-५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आर्य समाज पुस्तकालय,
भरतनिधि, करोल बाग
नई दिल्ली-5

# शांति-संगीत

१. साहित्य-संगीत-कला-विहीन :
साक्षात्-पशु-पुच्छ-विषाणहीनः। —भर्तृहरि

२. जिसके हृदय में संगीत नहीं है और जो उसकी सुमधुर ध्वनि से प्रभावित नहीं होता, वह निश्चय ही भयानक जीव है। —शेक्सपियर

३. संगीत में लय एवं ताल होते हैं। इसका बिजली की तरह प्रभाव होता है। उससे तुरत शांति मिलती है।
—महात्मा गांधी, यंग इंडिया, ८-९-१९२०

४. संगीत तो भग्न-हृदय का भैषज्य है। —ए० हन्ट

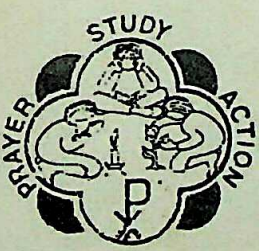

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# शांति-संगीत

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

प्रस्तोता
डॉ० रामजी सिंह
निदेशक, गांधी विद्या संस्थान

गांधी विद्या संस्थान
राजघाट, वाराणसी-१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

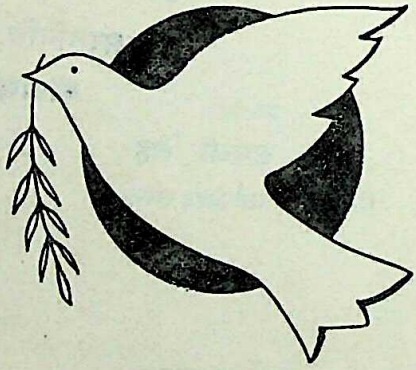

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के
योजना आयोग प्रकोष्ठ के सौजन्य से प्रकाशित

मुद्रक : जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०, गोलघर, वाराणसी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थाल
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

# अनुक्रम


| क्रमांक | शीर्षक | रचनाकार | पृ० स. |
|---|---|---|---|
| | **(क) प्रार्थना** | | |
| १- | सर्वधर्म-प्रार्थना (हिन्दी) | | ५ |
| २- | सर्वधर्म-नाममाला | विनोबाजी | ८ |
| ३- | शांति मंत्र | आश्रम भजनावलि | ९ |
| ४- | एकादश व्रत | ,, | ९ |
| ५- | रामधुन | ,, | ९ |
| | **(ख) भजन** | | |
| ६- | जाके प्रिय न राम बैदेही | तुलसीदास | १० |
| ७- | धर्मरथ | तुलसीदास | १० |
| ८- | समदर्शी प्रभु | सूरदास | ११ |
| ९- | पायोजी मैंने राम रतन धन पायो | मीरा बाई | १२ |
| १०- | झीनी-झीनी बीनी चदरिया | कबीरदास | १२ |
| ११- | वैष्णव जन तो तेने कहिये | नरसिंह मेहता | १३ |
| १२- | अंतर मम विकसित करो | रवीन्द्र नाथ | १३ |
| १३- | सबके लिये खुला है | तुकड़ोजी महाराज | १४ |
| १४- | हर देश में तू हर वेश में तू | ,, | १४ |
| | **(ग) राष्ट्रीय-गीत** | | |
| १५- | भारत की संतान | बसन्त राव तुलजापुरकर | १५ |
| १६- | हम धरती के लाल | शील | १८ |
| १७- | करें राष्ट्र निर्माण | श्री राम शर्मा 'प्रेम' | १९ |
| १८- | करना है निर्माण हमें | पिनाकिन ठाकुर | २० |
| १९- | केवल भारतवासी हैं | | २१ |
| २०- | सारे जहां से अच्छा | इकबाल | २१ |
| | **(घ) सद्भावना-गीत** | | |
| २१- | मत बांटो इन्सान को | | २२ |
| २२- | एक चंद्र एक सूर्य | बसंत तुलजापुरकर | २३ |

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


| क्रमांक | शीर्षक | रचनाकार | पृ० सं |
|---|---|---|---|
| २३- | एक जगत् की धरती माता | ,, | २३ |
| २४- | लहू का रंग एक है | | २३ |
| | **(च) शांति-गीत** | | |
| २५- | शांति के सिपाही चले | | २५ |
| २६- | हम लोग हैं ऐसे दीवाने | | २५ |
| २७- | राह की मुसीबतों से प्यार कर चलो | डा० लल्लन | २६ |
| २८- | हम तरुण हैं हिन्द के | | २७ |
| २९- | जय जगत् पुकारे जा | दुखायल | २८ |
| ३०- | वीरों की यह बाट | दुखायल | २८ |
| | **(छ) परिवर्तन-गीत** | | |
| ३१- | युग की जड़ता के खिलाफ | अशोक भार्गव | २९ |
| ३२- | साथी हाथ बढ़ाना | | ३० |
| ३३- | ये वक्त की आवाज है मिलके चलो | | ३१ |
| ३४- | बुनियाद हिलनी चाहिये | दुष्यंत कुमार | ३१ |
| ३५- | इसलिये राह संघर्ष की | बशिष्ठ अनूप | ३२ |
| ३६- | मानव से मानव का | राम गोपाल दीक्षित | ३२ |
| ३७- | आदमी को प्यार दो | गोपालदास नीरज | ३३ |
| ३८- | रुके न जो, झुके न जो | ,, | ३५ |
| ३९- | गंगा की कसम यमुना की कसम | | ३६ |
| ४०- | आचार बदलता नहीं अगर | | ३६ |
| ४१- | उठी लोक मानस में आँधी | राम गोपाल दीक्षित | ३८ |
| ४२- | सम्पूर्ण क्रान्ति होगी | | ३९ |
| | **(ज) समूह-गीत** | | |
| ४३- | हम होंगे कामयाब | मार्टिन लूथर किंग | ४० |
| ४४- | एकला चलो रे एकला चलो रे- | रवीन्द्र नाथ ठाकुर | ४१ |
| | **(झ) वंदना** | | |
| ४५- | हे नम्रता के सम्राट् | महात्मा गांधी | ४२ |
| ४८- | न त्वहं कामये राज्यम् | मालवीयजी (प्रेरक-मंत्र) | ४२ |

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

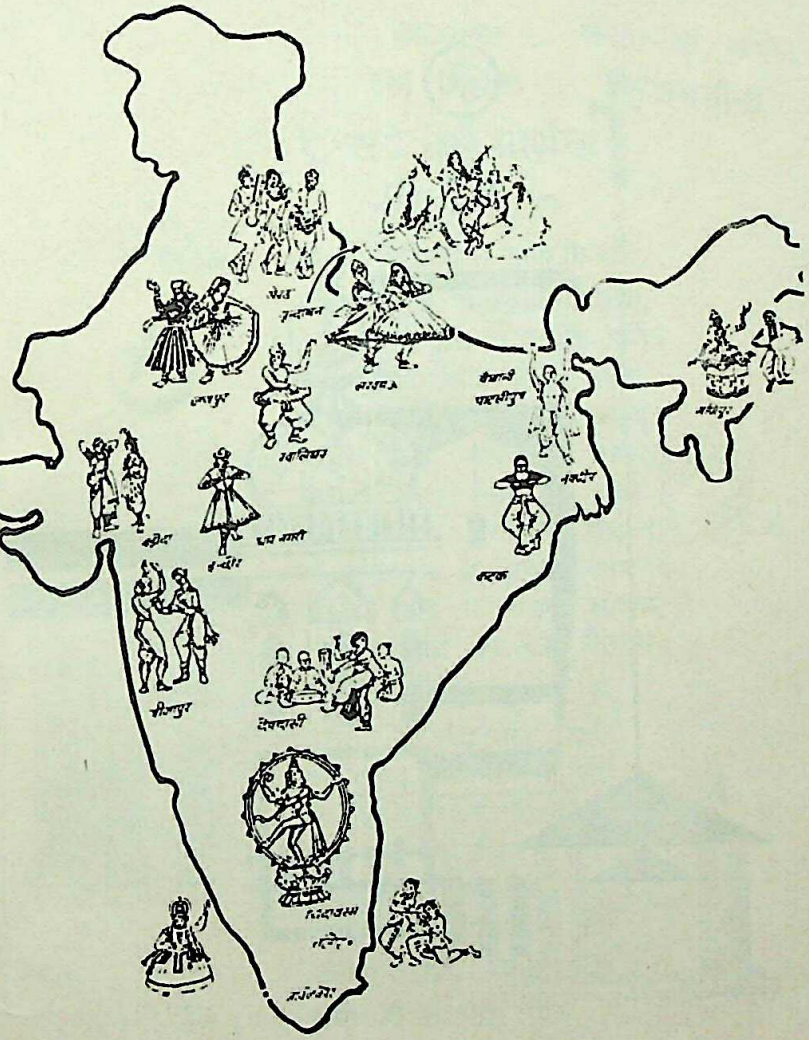


# प्राचीन संगीत-केन्द्र और शास्त्रीय नृत्यों के प्रभाव-अंचल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

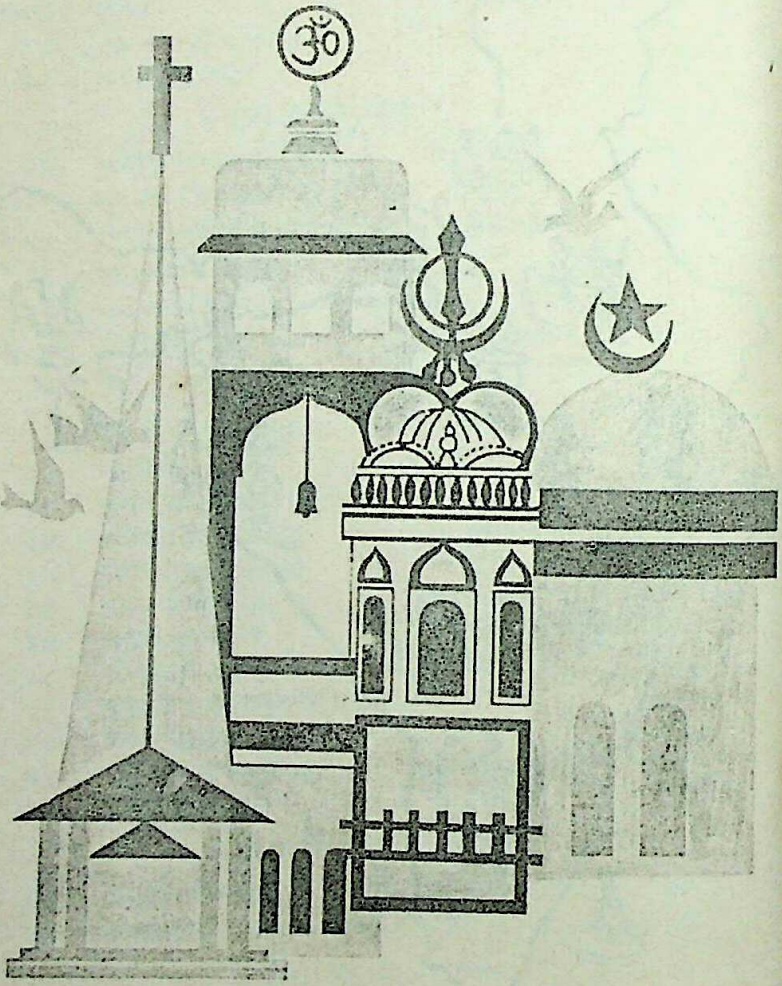

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थाग्र
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

शांति-संगीत

(क) प्रार्थना

# १. सर्व धर्म प्रार्थना

## (हिन्दी में)

वैदिक : ले जा असत्य से सत्य के प्रति,
ले जा तमस् से ज्योति के प्रति,
मृत्यु से ले जा अमृत के प्रति।
चलें साथ और बोलें साथ,
दिल से हिल-मिल जीयें साथ,
अच्छे कर्म करें हम साथ,
बैठ के साथ भजें हम नाथ।
हो संकल्प समान-समान,
हो जन-जन के हृदय समान,
सबके मन में भाव समान,
निश्चय सम हों कार्य समान।

ताओ : सद्व्यवहार करें मुझसे जो,
उनसे सद्व्यवहार करूँ।
दुर्व्यवहार करें उनसे भी,
मैं तो सद्व्यवहार करूँ॥
दुर्जन को सज्जन करने का,
सदाचार उपचार है।
द्वेष क्रोध को पिघलाने का,
सही तरीका प्यार है॥

जैन : क्षमा मैं चाहता सबसे,
मैं भी सबको करूँ क्षमा॥
मैत्री मेरी सभी से हो,
किसी से वैर हो नहीं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बौद्ध : जीतो अक्रोध से क्रोध,
साधुत्व से असाधु को,
कंजूसी दान से जीतो,
सत्य से झूठवाद को।
वैर से न कदापि भी,
मिटते वैर हैं कहीं।
मैत्री ही से मिटे वैर,
यही धर्म सनातन।

इस्लाम : दयावान को करूँ प्रणाम,
कृपावान को करूँ प्रणाम्
विश्व सकल का मालिक तू,
अन्तिम दिन का चालक तू।
तेरी भक्ति करूँ सदा,
तेरी मान्यता करूँ सदा।
दिखा हमें तू सीधी राह,
जिन पर तेरी रहम निगाह।
ऐसों की जो सीधी राह,
दिखा हमें वह सीधी राह॥
जिन पर करता है तू क्रोध,
भ्रमित हुए या हैं गुमराह।
उनके पथ का लूं नहीं नाम,
दयावान् को करूँ प्रणाम॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## शांति-संगीत

सिक्ख : नाम जपो कीरत करो बाँट के खाओ बन्दे,
सत्य वहां पे जानिये,
जहाँ हृदय सच्चा होए,
मन का मैल उतारे,
और तन आज धोए ।
सत्य वहाँ पे जानिए,
जहाँ हो सत्य से प्यार,
नाम सुन स्थिर रहे मन,
वही मोक्ष का द्वार ।
सत्य वहाँ पे जानिए,
जहाँ सीख अच्छी होए,
दया करके जीव की,
कुछ दान धर्म का देय ।
सत्य सबकी औषधि,
लेते पाप निकाल,
नानक कहे सत्य धरे,
पावे सत् श्री अकाल ॥

पारसी : हे प्रभो, तुम उत्तमोत्तम धर्म संदेशा सुना,
ताकि नेकी राह चल मैं तेरी महिमा गा सकूँ ।
चाहता है जिस मुताबिक उस मुताबिक तू चला;
जिन्दगी की ताजगी के स्वर्ग सुख को पा सकूँ ।

यहूदी : धन्य प्रभु है नाम तिहारा,
नित्य निरंतर सांझ सबेरा।
सारे जग से है तू अपार,
स्वर्ग से कीर्ति तेरी गुरुतर ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्वर्ग मर्त्य में कोई न तुझसा,
सिंहासन पर आरूढ़ जैसा ।
बैठा यद्यपि इतने ऊँचे,
देख रहे करुणा से नीचे ।

ईसाई : शान्ति का वाद्य बना तू मुझे,
प्रभु शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ।
हो तिरस्कार वहां करूँ स्नेह,
हो हमला तो क्षमा करूँ मैं ।
हो जहाँ भेद, अभेद करूँ,
हो जहाँ भूल, मैं सत्य करूँ ।
हो संदेह वहाँ विश्वास,
घोर निराश, वहाँ करूँ आस ।
हो अंधियारा, वहाँ पे प्रकाश,
हो जहाँ दुःख उसे करूँ हास ।
शान्ति का वाद्य बना तू मुझे,
प्रभु शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ॥

## २. सर्व धर्म नाममाला

ओम् तत्सत्, श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू ।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द, विनायक, सविता, पावक तू ।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु पिता प्रभु तू ।
रुद्र विष्णु तू, राम, कृष्ण तू, रहीम, ताओ तू ।
वासुदेव गो विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू ।
अद्वितीय तू, अकाल, निर्भय, आत्म लिंग शिव तू ॥

—आचार्य विनोबा भावे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ३. शान्ति मंत्र

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित् दुख भागभवेत्।
सभी सदा सुखी होवें, सभी स्वस्थ नीरोग हों।
सभी मंगलता देखे ना किसे कोई दुःख हो॥

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ सहनाववतु ।
सह नौ भुनक्तु ।
सहवीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनाधीतमस्तु
मा विद्विषाबहे।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतम् गमय।
शान्तिः शान्तिः शान्तिः

## ४. एकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह,
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ।
सर्वधर्म-समानत्व, स्वदेशी स्पर्शभावना,
विनम्र व्रत निष्ठा सेये एकादश सेव्य हैं ॥

## ५. मंगल पाठ : रामधुन

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम॥
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान्॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ख- भजन

## ६. जाके प्रिय न राम बैदेही

तजिये ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही ॥
तज्यौ पिता प्रहलाद,विभीषण बंधु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यौ ब्रज वनिता,भए मुद मंगलकारी ॥

—तुलसीदास

## ७. धर्मरथ

रावनु रथी बिरथ रघुवीरा देखि विभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा ।बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । केहि विधि जितबबीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दस परहित घोरे ।क्षमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईस वचन सारथी सुजाना ।बिरतिचर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा ।बर विग्यान कठिन कोदंडा ॥
अमलअचल मन त्रोन समाना ।सम जम नियम सिली मुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा ।एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें । जीतन कहँन कतहुँरिपु ताकें ॥

—तुलसीदास

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ८. समदर्शी प्रभु

प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो,
चाहे तो पार करो ॥
एक नदियाँ एक नार कहावत,
मैलो ही नीर भरो।
जब मिल करके एक बरन भए,
सुरसरी नाम पड़यौ ॥
एक लोहा पूजा घर राखत,
एक घर बधिक पड़यौ।
पारस गुण अवगुण नहीं चितवत,
कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रम जाल कहावत,
सूरदास सगरो।
अबकी बेर मोही पार उतारो,
नहिं प्रण जात टरो ॥

—सूरदास

## ९. पायोजी मैंने राम-रतन

पायोजी मैंने राम-रतन धन पायो।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु
किरपा कर अपनायो ॥१॥
जनम-जनम की पूंजी पाई,
जग में सभी खोवायो ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



खरचे न खूटे, वाको चोर न लूटे,
दिन दिन बढ़त सवायो ॥३॥
सत की नाव, खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो ॥४॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,
हरख हरख जस गायो ॥५॥

—मीराबाई

## १०. झीनी झीनी

झीनी-झीनी बीनी चदरिया ।
काहे के ताना काहे के भरनी ।
कौन तार से बीनी चदरिया ॥
इंगला पिंगला ताना भरनी ।
सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥
आठ कँवल दल चरखा डोले ।
पांच तत्त्व, गुन बीनी चदरिया ॥
साईं को सियत मास दस लागे ।
ठोंकि-ठोंकि के बीनी चदरिया ॥
सो चादर सुर - नर - मुनि ओढ़े
औढ़िके मैली कीनी चदरिया ॥
दास कबीर जतन से ओढ़ी ।
ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

—कबीरदास

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ११. वैष्णव जन

वैष्णव जन तो तेने कहिए. जे पीड़ पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे॥
सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे॥
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे॥
वणलोभी ने कपटहित छे काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयों तेनु दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे॥

—नरसी मेहता

## १२. अंतर मम विकसित करो

अंतर मम विकसित करो अन्तरतर हे।
निर्मल करो उज्जवलकरो सुंदर तर हे।
जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे।
मंगल करो, निरलस निःसंशय करो हे॥
युक्त करो हे सबार संगे, मुक्त करो हे बंध।
संचार करो सकल कर्म शांत तोमार छंद॥
चरणपद्मे मम चित्त निष्पंदित करो हे,
नंदित करो, नंदित करो, नंदित करो हे॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## १३. सबके लिए खुला है।

सबके लिए खुला है, मंदिर यह है हमारा।
मतभेद को भुलाता, मंदिर यह है हमारा॥
आओ सभी ही पंथी, आओ सभी ही धर्मी।
देशी, विदेशियों का, मस्जिद है यह हमारा॥
मानव का धर्म क्या है, मिलती हैं राह जिसमें।
चाहता भला सभी का, गिर्जा है यह हमारा॥
संतों की उच्चवाणी, सब जन हैं भाई-भाई।
सब देवता समाता, गुरुद्वारा है यह हमारा॥
मतभेद होने पर भी, मनभेद हो न पाये।
हर एकता का हामी, मंदिर है यह हमारा॥
आओ सभी मिलेंगे, बैठेंगे प्रार्थना में।
तुकड़या कहे अमर है, मंदिर है यह हमारा।

—तुकड़ोजी महाराज

## १४. हर देश में तू

हर देश में तू हर भेष में, तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंगभूमि यह विश्व भरा, हर खेल में, मेल में, तू ही तो है।
सागर में उठा बादल बनकर, बादल से फूटा जल होकर के।
फिर नहर बना नदिया गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है॥
मिट्टी से भी अणु परमाणु बना, तूने दिव्य जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना, सौंदर्य तेरा तू एक ही है॥
यह दृश्य दिखाया है जिसने, वह है गुरुदेव की पूर्ण दया।
तुकड़या कहे कोई और न दिखा, बस तू और मैं सब एक ही हैं॥

—तुकड़ोजी महाराज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ग- राष्ट्रीय गीत

## १५. भारत की संतान (बहुभाषा गीत)

भारत की सतान हम हैं, भारत की संतान।
नदियाँ जैसी बहु भाषाएँ, सबका स्थान समान॥

संस्कृत : बुधजन तारण कारण दाता
वाण कवीश्वर भारवी गीता
देव गवीयम् भारत माता
कालिदास जय भाग्य निदान

मणिपुरी : याई फरे याइ फरे याई फरे याई फरे
सालाई तारेना थौगन्बा
चींमीना कोईना पनड़ाकपा
मलेम्दा तोमकीन ड़ानलिवा
मणिपुर साना लैपाकना

कश्मीरी : बुचस वलवलुर गलित
आमुत जिन शीनमाय
बुचस इल्मों अद वुच
मशल हग्रत्पकाल।

गुजराती : गर्वी गुजरी हूँ गांधीनी
नरसो नर्मदानी छूं खाण
भारत मातनी पुत्री लाड़ली
सरदारे साध्यूं अकेतान् ।

मलयालम : केरला नाट्टिन कथकली गानम् आन
आचार्य तुन्वन्दे पेगिंली कोंचन् आन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



नम्वियार कुंचण्दे तू मन्दहासन् आन
केरल तेनमुली केरल देवि आन ।

मराठी : मीच मराठी ज्ञानेशा ची
अभंग गाथी श्री तुकया ची
सेवा करूनी निज मोते ची
तिचा वाढ़ विन मान् ।

तेलुगु : तेलगू देशमुनु वेलुगुलु चूपड़ि
तेलगू तेजमुनु नेनू
आदि कवि ननैय्या काव्यानि नेनू
शतवाहन नृपति शोयन्नि नेनू ।

बंगाली : बंकिमेर अमि वंदेमातरम्
विवेकानन्देर तत्वज्ञान
शुनावो काब्यो मेघनाद होते
काजी नजरूल्लेर विप्लव गान
एशो एशो सवे मिले
गाओ जन-गण-मन रवीन्द्र
नाथेर कविता गान
उज्ज्वल करिवे भारत मातारे
वाड़िवे बांगलार मान् ।

सिन्धी : सिन्धु अजानित कंठा गूंजि
सिन्धी कच्ची मिठड़ी भाषा
सूफी संतन जी सा आशा
वीरन् जो वरदान ।

नेपाली : मादल को समलाला भाका मिठो गाएर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्म गछौं स्वदेशमा सत्यनाम लिएर
गोखोली बीर उच्च छ शीर
सागरमाथा हो महान् ।

कोंकणी : गोंय आमचो प्रांत सान
कोंकणी भास ताची शान
शांती आनी सूख समाधान
देखून भारताचें गौरवास्थान
गुरूनाथ पैं.

ऊर्दू : मैं हूं उर्दू हिन्दुस्तानी
कौमों की एकता की निशानी
लोग चाहती महलों की रानी
मेरी निराली आन ।

कन्नड़ : वसव माधवर यशोनिकेतन
कनक पुरन्दर गान रसायन
पम्पन वाग्वैभव कन्नड़ ना
माहुवे ताई बलवान ।

पंजाबी : पंजाबी मैं पंज दरियां दो वारिस
शाह हाशम दें हीरांदि
नानक अर्जन जँह पीरां दी
उच्ची कर रही शान ।

तमिल : कलवी सिरन्दनर कंवन उम्मरै
वल्लुवन तन्नेयुम पेद्रडूत्तेन पंडे
भारत नाटिन पिरंदु विलगिय
पनवुडे नद्रमिलं नानै तान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हिन्दी : हिन्दी की मैं अथाह सागर
तुलसी, मीरा, सूर, कबीरा बनकर
निज माता पर रत्न चढ़ाकर
बढ़ा रही हूँ भारत की शान॥

भारत की संतान हम हैं, भारत की संतान।
भारत की संतान हम हैं, भारत की संतान॥

—वसन्तराव तुलजापुरकर

## १६. हम धरती के लाल

देश हमारा, धरती अपनी,
हम धरती के लाल, हम धरती के लाल।
नया संसार बसायेंगे, नया इन्सान बनायेंगे॥ देश०॥
सौ,सौ, स्वर्ग उतर आयेंगे,
सूरज सोना बरसायेंगे।
दूध पूत के लिये पहिनकर,
जीवन की जयमाल।
रोज त्यौहार मनायेंगे-नया संसार बसायेंगे॥ देश०॥
सुख सपनों के स्वर गूँजेंगे,
मानव की मेहनत पूजेंगे,
नई चेतना, नये विचारों की,
हम लिये मशाल।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



समय को राह दिखायेंगे-नया संसार बनायेंगे ॥ देश० ॥
एक करेंगे मनुष्यता को,
सींचेंगे ममता समता को।
नई पौध के लिये बदल देंगे,
तारों की चाल।
नया भूगोल बनायेंगे-नया संसार बनायेंगे ॥ देश० ॥
देश हमारा, धरती अपनी,
हम धरती के लाल, हम धरती के लाल।

—शील

## १७. करें राष्ट्र निर्माण

करें राष्ट्र-निर्माण बनाएँ, मिट्टी से अब सोना।
शस्य श्यामला सुजला सुफला, धरती के हमवासी।
फिर क्यों अपने महादेश की जनता रहे उपासी।
अन्न धान से भर दें अपने घर का कोना-कोना ॥ मिट्टी०
गंगा-यमुना यहां बहाती हैं अमृत की धारा।
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा-कावेरी जल है, पय से प्यारा।
पय की धारा से धरती का, सूखा भाग भिगोना ॥ मिट्टी०
सागर हमको देता अपने दूत जलद गम्भीर।
और हिमालय देता हमको, शीतल मंद समीर,
गर्वोन्नत मस्तक रख कहता, कभी न विचलित होना ॥ मिट्टी०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आज हमारे दिव्य देश में, प्रजातंत्र सुखदायी,
प्रजातंत्र का काम प्रजा की, होती रहे भलाई,
यहाँ एक ही घाट पिये जल, सिंह और मृगछौना ॥ मिट्टी०
स्वप्न स्वर्ग का धरती पर उतरेगा श्रम के द्वारा,
आज पसीने की बूंदों में, छिपा भविष्य हमारा,
अब आराम हराम, राष्ट्र से, द्रोह एक पल खोना ॥मिट्टी०

—श्रीराम शर्मा 'प्रेम'

## १८. करना है निर्माण

करना है निर्माण हमें, नव भारत का निर्माण ।
हमें नव भारत का निर्माण।
हमें हमारे देश की जग में, बढ़ानी होगी शान।
करना है निर्माण
यही हमारी सब धरती हो, खेतों में हरियाली।
फूल फलों से झूम रही हो, वन की डाली - डाली।
नदी, नहर, सरवर, बरखा के जल से बरसे धान॥
करना है निर्माण
हिमगिरि के ऊँचे शिखरों पर, फूल चढ़ाने जाएँ॥
रत्नाकर के अतुल नील नित, खोज के रत्नों पाएँ।
गायें बन कुंजों की मनहर, सुन्दरता के गान॥
करना है निर्माण
कोई न भेद रहे आपस में, हम सब भाई - भाई।
भारत की सब सन्तानों में, सच्ची प्रेम भलाई ।
सत्य, अहिंसा के प्रण से, पत्थर में प्रगटे प्राण ॥
करना है निर्माण

—पिनाकिन ठाकुर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## १९. केवल भारतवासी हैं

हम पंजाबी, हम गुजराती, बंगाली, और मद्रासी हैं,
लेकिन हम इन सबसे पहले, केवल भारतवासी हैं॥
हम बच्चे अपने हाथों से, अपना भाग्य बनाते हैं,
मेहनत करते बंजर धरती से सोना उपजाते हैं,
पत्थर को भगवान् बना दे, ऐसे हम विश्वासी हैं॥
वह भाषा हम नहीं जानते, बैर भाव सिखलाती जो।
कौन समझता नहीं बाग में, बैठी कोयल गाती जो,
जिनके अक्षर देश-प्रेम के, हम वह भाषा-भाषी हैं॥
हमें प्यार आपस में करना, पुरखों ने सिखलाया है,
हमें देश-हित जीना मरना, पुरखों ने सिखलाया है,
हमें उनके बतलाए पथ पर, चलने के अभ्यासी हैं॥
हम पंजाबी, हम गुजराती.....॥

## २०. सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिसतां हमारा॥
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा॥
परबत वो सबसे उँचा हमसाया आसमां का।
वह सन्तरी हमारा, वह पासबां हमारा॥
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियां
गुलशन हो जिनके दम से, रश्के-जिनां हमारा॥
ऐ आब रूदे गंगा, वह दिन है याद तुझको।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उतरा तेरे किनारे, जब कारवां हमारा ॥
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।
हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा ॥
यूनान, मिस्र, रोम सब मिट गये जहां से।
अब तक मगर है बाकी, नामोनिशां हमारा ॥
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे - जमां हमारा ॥
इकबाल, कोई महरम, अपना नहीं जहां में।
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ॥

इकबाल

घ– सद्भावना

## २१. मत बाँटो इन्सान को

मन्दिर मसजिद गिर्जाघर ने बाँट लिया भगवान् को
धरती बाँटी सागर बाँटा मत बाँटो इन्सान को.....
अभी राह तो शुरू हुई है मंजिल दिखती दूर है
उजियारे महलों में बन्दीं हर दीपक मजबूर है.....
अब भी हरी भरी धरती है ऊपर नील वितान है
पर न प्यार हो तो जब सूनाजलता रेगिस्तान है....
हर उदास आँगन को कर दो खिलती हुई बहार रे !
रौंद न पयेगा फिर कोई नव बसन्त-मुसकान को।
॥धरती बाँटी.....॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## २२. एक चंद्र, एक सूर्य

एक चंद्र, एक सूर्य, एक भूमि, आसमान।
एक जगत् एक लोक, सबका है एक मान॥
एक तेज, एक हवा, एक ही पानी।
जीवन है सुख - दुःख की एक कहानी।
एक देह, एक रक्त, एक अस्थि, एक प्राण॥
हर्ष भरे गाएँ हम राग सुहाने।
समता और ममता के गीत तराने।
घर-गर में गूंज उठे, निशि-दिन यह मधुर तान॥
राष्ट्रों में ऐक्य यही कर्म हमारा॥
प्रगति, न्याय, मानवता धर्म हमारा।
हिल-मिलकर लहराएं विश्वशांति का निशान॥

—बसन्त तुलजापुरकर

## २३. एक जगत् की धरती माता

एक जगत् की धरती माता, सब उसकी सन्तान।
सब उसकी सन्तान॥
भेद भाव से हम मुख मोड़ें, दुष्कर्मों का मारग छोड़ें।
सब राष्ट्रों से नाता जोड़ें, बने गुणों की खान॥
बनें गुणों की खान॥ एक.....
सत्य अहिंसा प्रेम बढ़ाएँ, देश भक्ति का दीप जलाएँ।
जन सेवा को धर्म बनाएँ, रहे इसी में ध्यान॥
रहे इसी में ध्यान। एक.....

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दुर्जन को भी कर दें सज्जन, मानवतामय हो यह जीवन।
सदा नीति पर वारें तन-मन, बढ़े हमारी शान ॥
बढ़े हमारी शान ॥ एक.....
बुद्ध, मोहम्मद, खिस्त, महात्मा, दया रूप थी सबकी आत्मा।
प्रगति न्याय के वह परमात्मा, जग में उनका मान॥
जग में उनका मान ॥ एक.....

—बसन्त तुलजापुरकर

## २४. लहू का रंग एक है

लहू का रंग एक है अमीर क्या गरीब क्या ?
बने हैं एक खाक से, तो दूर क्या करीब क्या ?
वही है तन, वही है जान, कब तलक छुपाओगे।
पहन के रेशमी लिवास कि तुम बदल ना जाओगे।
सभी हैं एक जाति हम, स्वर्ण क्या अवर्ण क्या ?
लहू का रंग .....
गरीब वो हैं इसलिए कि तुम अमीर हो गये।
कि एक बादशाह हुआ तो सौ फकीर हो गये।
खता है यह समाज की, भले-बुरे नसीब क्या ?
लहू का रंग.....
जो एक हैं तो क्यों न फिर दिलों का दर्द बाँट ले।
जिगर की प्यास बाँट लें, लबों की गर्द बाँट लें ।
लगा लो सबको तुम गले, हबीब क्या रकीब क्या ?
लहू का रंग .....
कोई जने हैं मर्द तो कोई जनी हैं औरतें
शरीर में हो भले फर्क, रूह सबकी एक है
एक हैं जब हम सभी, गैरियत की वजह क्या ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ५- शांति-गीत

# २५. शांति के सिपाही चले

शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले,
लेके खैरख्वाही चले, रोकने तबाही चले ॥
वैर भाव तोड़ने, दिल को दिल से जोड़ने,
काम को संवारने, जान अपनी वारने ॥
विश्व के ये पासवां, लेके सेवा का निशां,
भीरूता से सावधां, चल पड़े हैं बेगुमां ॥
सत्य की संभाल ढाल, अहिंसा की ले मशाल,
धरती माँ के नौनिहाल, हैं निकल पड़े सुचाल ॥
'जय जगत' - (३) पुकारते, बढ़ रहे बिना रुके,
लेके दिल के बलबले, अपने ध्येय को चले ॥

दुखायल

# २६. हम लोग हैं ऐसे दीवाने

हम लोग हैं ऐसे दीवाने, दुनिया को बदलकर मानेंगे ।
मंजिल की धुन में आए हैं, मंजिल को पाकर मानेंगे ॥
जो लक्ष्य हो अपना पूरा हो, उस वक्त तसल्ली पायेंगे ।
ऐसे तो नहीं टलने वाले हम आगे बढ़ते जायेंगे ।
इस दिल में हजारों मौजें हैं तूफान उठाकर मानेंगे ॥
दो दिन की बहारें हैं जग में, जब जुल्म किसी का चलता है ।
इस जुल्म का सूरज लाख जले, हर शाम को लेकिन ढलता है ।
नफरत के शोले दिल में हैं, हम उनको बुझाकर मानेंगे ॥
सच्चाई की खातिर इस जग में, गांधी ने भी गोली खाई है ।
ईसा को चढ़ाया शूली पर, सच्चों ने ही जान गवाई है ।
हाँ, हम भी किसी से कम तो नहीं, तकदीर बदलकर मानेंगें ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



# २७. राह की मुसीबतों से प्यार कर चलो

गलत मत कदम उठाओ सोच कर चलो,
विचार कर चलो, राह की मुसीबतों से प्यार कर चलो ॥
तुम पे जिम्मेदारियाँ हैं मुल्क की पड़ी ।
तुम न बदलो चाल अपनी अब घड़ी-घड़ी ।
तुम पे आने वाली आस की नजर पड़ी ।
चिराग ले चलो, आग ले चलो ॥
मस्तियों में रंग भरे फाग ले चलो ॥
रहो होशियार हमेशा न तुम डरो ।
दरिया आसमान पहाड़ों को सर करो।
जहान की तरक्कियों के वास्ते मरो ।
आवाज करेगा, साज करेगा ।
तुम्हारी वीरता पे जहां नाज करेगा।
दूर किनारे रहे न मिले या शिखर ।
मंजिल के मुसाफिर तुझे क्या राह की फिकर ।
चट्टान तू तूफान के झोंकों का क्या जिकर ।
अंधेरा जा रहा, दिन है कि आ रहा ।
वो कौन मंजिलों पे मंजिले उठा रहा ॥
जिन्दगी बेकार मरना इल्जाम है ।
काम में लगे रहो, यही आराम है ।
नहीं तो पानी भी यहाँ पीना हराम है।
बझो न बात में, हो ध्येय साथ में ।
गिरे को उठाने की हो ताकत भी हाथ में ॥
काल की करवाल से इन्सान कब डरा ।
तू प्रलय के बादलों को छोड़ तो जरा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लाख मौत हो मगर, मनुष्य कब मरा ।
ज्योत जो जला, पंथ जो चला ।
प्रेम का पला, भला वो सूर्य कब ढला ॥

—डा. लल्लन

## २८. हम तरुण हैं

हम तरुण हैं हिन्द के, हम खेलते अंगार से ।
लड़ते नहीं हथियार से, डरते नहीं तलवार से ।
हम जीतते हैं प्यार से ॥
आंधियों के बीच में राहें निमंत्रण दे रहीं ।
लाख पथ रोके बवंडर हम तो ना कहते नहीं ।
हम खेवैया नाव ले जाते सदा मंझदार से ॥
चांद - सूरज और सितारे लाख ये ढलते रहें ।
जिन्दगी के कारवाँ चलते रहें, चलते रहें ।
कौन है मुझको बुलाता क्षितिज के उस पार से ॥
मुक्ति का ले मंत्र मेरे देश में गांधी बढ़ा ।
सत्य का संग्राम सबने त्याग के बल पर लड़ा ।
क्रांति की ज्वाला कभी बुझती नहीं फुफकार से ॥
किरण की जलती मशालें और चंदा का दीया ।
भाल विस्तृत है गगन सा और धरती का हिया ।
प्रेम का पंथी कभी लौटा न खाली द्वार से ॥

—डॉ० लल्लन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## २९. जय जगत पुकारे जा

जय जगत, जय जगत, जय जगत पुकारे जा,
जय जगत पुकारे जा सिर अमन पे वारे जा।
सबके हित के वास्ते, अपना सुख बिसारे जा ॥ जय जगत ॥
प्रेम की पुकार हो, सबका सबसे प्यार हो,
जीत हो जहान की, फिर क्यों किसी की हार हो ?॥ जय जगत ॥
न्याय का विधान हो, सबका हक समान हो ।
सबकी अपनी हो जमीन, सबका आसमान हो ॥ जय जगत ॥
रंग भेद छोड़ दो, जात - पाँत तोड़ दो।
मानवों की आपसी; अखण्ड प्रीति जोड़ दो ॥ जय जगत ॥
शांति की हवा चले, जग कहे भले - भले,
दिन उगे सनेह का, रात रंज की ढले ॥ जय जगत ॥

## ३०. वीरों की यह बाट

वीरों की यह बाट है भाई, कायर का नहीं काम रे।
सर पर बांध कफन जो निकले, बिन सोचे परिणाम रे॥
दिल का घोड़ा कसकर दौड़ा, मार चला मैदान रे।
चलता मुसाफिर ही पायेगा, मंजिल और मुकाम रे॥
दीप-शिखा से लिपट चला, आतुर जलने को पतंगा ।
तन तो जलकर राख भया, पर मन को मिला आराम रे॥
जिनको लगी सेवा की लगन, कुरबानी का जिन पर रंग चढ़ा ।
ऐसे मस्त कहां लेते हैं, सुख और चैन का नाम रे॥
हिम, आतप, वर्षा भी जिनके, बढ़ते पैर न रोक सके ।
हरि के कार्य बिना साधे, हम सबको कब विश्राम रे॥
आओ साथी साथ चलें, इस साथ से देश के साथ रहे।
शांति – सेना मांग रही, तेरी सेवा निष्काम रे॥

—दुखायल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## (घ) परिवर्तन गीत

# ३१. भारतीय सांस्कृतिक क्रांति

युग की जड़ता के खिलाफ, एक इन्कलाब है,
हिन्द के जवानों का, एक सुनहरा ख्वाब है।
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति ॥ मानवीय सांस्कृतिक क्रांति ॥
व्योम में हमारी पहुंच बढ़ रही है आज, पर
दूर हो रहा है घर पड़ोसी का।
आदमी को आदमी के करीब लायेगी,
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति। मानवीय सांस्कृतिक क्रांति ॥
आदमी भविष्य में यंत्र का न हो गुलाम,
मानवीय गुण बढ़ेंगे काम से।
ऐसे योग युक्त काम हर जगह चलायेगी,
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति ॥ मानवीय सांस्कृतिक क्रांति ॥
ले के हाथ हल-कुदाल और ज्ञान की मशाल,
आओ चले साथ-साथ गांव को।
क्योंकि गांव-गांव से दीनता मिटायेगी,
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति ॥ मानवीय सांस्कृतिक क्रांति ॥

—अशोक भार्गव

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



# ३२. साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जायेगा, मिलकर बोझ उठाना, साथी हाथ बढ़ाना
हम मेहनत वालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रास्ता छोड़ा, पर्वत ने सीस झुकाया
फौलादी है सीने अपने फौलादी है बांहें
हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों में राहें ॥
मेहनत अपने लेख की रेखा मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की अब अपनी खातिर करना
अपना दुःख भी एक है साथी अपना सुख भी एक
अपनी मंजिल सच्ची मंजिल अपना रास्ता नेक ॥
एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया
एक से एक मिले जो जर्रा बन जाता है सहारा
एक से एक मिले तो राई बन सकती है पर्वत
एक से एक मिले जो इन्सां बस में कर ले किस्मत ॥
मांटी से हम लाल निकाले मोती लाएं जल से
जो कुछ इस दुनिया में बना है बना हमारे बल से
कब तक मेहनत के पैरों ये दौलत की जंजीरें
हाथ बढ़ाकर छीन लो अपने सपनों की तस्वीरें ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ३३. वक्त की आवाज

ये वक्त की आवाज है मिल के चलो
ये जिंदगी का राज है मिल के चलो
चलो भाई, मिल के चलो–३
आज दिल की रंजिशें मिटा के आओ
आज भेदभाव सब भुला के आओ
आजादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम
कदम कदम से और दिल से मिला के आओ ॥
जैसे सुर से सुर मिले हो राग के राग के
जैसे शोले बनके बढ़े आग के आग के
न जिस तरह चिराग से जले चिराग
ऐसे चले भेद तेरा मेरा त्याग ॥
ये भूख क्यूं ये जुल्म का ये जोर क्यूं
ये जंग जंग जंग है ये शोर क्यूं
हर एक नजर बुझी बुझी हरेक दिल उदास
बहुत फरेब खाए हम और फरेब क्यूं ॥

## ३४. बुनियाद हिलनी चाहिए

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

—दुष्यंत कुमार

## ३५. राह संघर्ष की

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें, जिन्दगी आंसुओं में नहायी न हो।
शाम सहमी न हो,रात हो न डरी,भोर की आंख फिर डबडबायी न हो ॥
सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे, रोशनी रोशनाई में डूबी न हो।
यूं न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा, हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो ।
आसमां में टंगी हो न खुशहालियां, कैद महलों में सबकी कमाई न हो॥
कोई अपनी खुशी के लिए गैर की, रोटियां छीन ले हम नहीं चाहते।
छींटकर थोड़ा चारा कोई उम्र की, हर खुशी बीन लें हम नहीं चाहते।
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा, और किसी के लिए एक चटाई न हो॥
अब तमन्नायें फिर न करें खुदकुशी, ख्वाब पर खौफ की चौकसी न रहे. ।
श्रम के पावों में हो ना पड़ी बेड़ियां, शक्ति की पीठ अब ज्यादती ना सहे ।
दम ना तोड़े कहीं भूख से बचपना, रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो।

—वशिष्ठ अनूप

## ३६. मानव से मानव का

किन्नर - गन्धर्व - देवताओं की बात नहीं,
मानव से मानव का मुक्त - मिलन चाहिए ।
चिन्ता की बात नहीं,साधक के पासअगर—
आरती समेत सुघर पूजा का थाल न हो,
चिन्ता की बात नहीं, वन्दना के गीत न हो,
चिन्ता की बात नहीं, सुमनों की माल न हो।
देवता भी अपना प्रतिबिम्ब जहाँ देख सके,
साधक की अञ्जलि में अश्रु-सुमन चाहिए॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



साधक की अञ्जलि में अश्रु-सुमन चाहिए॥
परदे रंगीन लगे द्वार-द्वार बेशुमार,
मेज और कुर्सियों का वस्त्र से श्रृंगार है।
पूजते पाषाण यहाँ भूखे भगवान नहीं,
नफरत इन्सानों से, श्वानों से प्यार है।
शीत की निशीथ में ठिठुरता जो द्वार पड़ा,
उसको तो जीवित ही आज कफन चाहिए॥
मेहनत मजदूर की व नारी का शील आज,
चांदी के टुकड़ों से बिकता समाज में।
अब भी उत्पात शेष पूंजी के देश बीच,
महलों में प्रात और झोंपड़ी में रात है।
महलों की छाया में सोना-स्वीकार नहीं,
छोटी सी झोंपड़ी की शांत शरण चाहिए॥
कर में विज्ञान और दिमाग में है राजनीति,
घातक अणु अस्त्रों का करता निर्माण है।
पाकर वरदान अरे भस्मासुर आज बना,
मानव को हिंसा की शक्ति का गुमान है।
शांति का संदेश लिए, रोकने को सर्वनाश,
आगे जो बढ़ सके वे दिव्य चरण चाहिए।

रामगोपाल दीक्षित

## ३७. आदमी को प्यार दो

सूनी सूनी जिन्दगी की राह है,
भटकी- भटकी हर नजर निगाह है।
राह को संवार दो, निगाह को निखार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो।
रोते हुए आंसुओं की आरती उतार दो॥
तुम हो एक फूल कल जो धूल बनके आयेगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आज है हवा में कल जमीन पर ही आयेगा।
चलते वक्त बाग बहुत रोयेगा रुलायेगा।
खाक के सिवा मगर न हाथ कुछ भी आयेगा
जिन्दगी के खाक लिये साथ में, बुझते-बुझते सपने लिए हाथ में,
रूक रहा है जो उसे सहार दो, चल रहा हो उसका पथ बुहार दो॥
जिन्दगी यह क्या बस सुबह का एक नाम है,
पीछे जिसके रात है, और आगे जिसके शाम है,
एक ओर छांह सघन, एक ओर शाम है,
जलना-बुझना-बुझना-जलना सिर्फ जिसका काम है,
न कोई रोकथाम है।
खौफनाक गारों बियावान में। मरघटों के मुर्दा सुनसान में।
बुझ रहा हो जो उसे अंगार दो। जल रहा हो जो उसे उभार दो॥
जिन्दगी की आंख पर मौत का खुमार है।
और प्राण को किसी पिया का इंतजार है।
मन की मनचली कली तो चाहती बहार है।
किन्तु तन की डाली को पतझड़ से प्यार है।
पतझड़ के पीले-पीले वेश में। आंधियों के काले-काले देश में।
खिल रहा है जो उसे सिंगार दो। झड़ रहा है जो उसे बहार दो॥
प्राण एक गायक है, दर्द एक तराना है।
जन्म एक तार है, जो मौत को बजाना है।
स्वर ही रे जीवन है, सांस तो बहाना है।
प्यार एक गीत है जो बार-बार गाना है, सबको दुहराना है।
सांस की सिसक रही, सितार पर।
आंसुओं के गीले - गीले तार पर।
चुप हो जो उसे पुकार दो। गा रहा हो जो उसे मल्हार दो॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक चांद के बगैर सारी रात स्याह है।
एक फूल के बिना चमन अमीन खार है।
जिन्दगी तो खुद ही एक आह है-कराह है।
प्यार भी जो न मिले तो जीना फिर गुनाह है।
धूल के पवित्र नेत्र नीर से। आदमी के दर्द आह चीर से।
जो घृणा करे उसे बिसार दो, जो प्यार करे उस पे दिल निसार दो॥

—गोपालदास नीरज

## ३८. रूके न जो

रूके न जो, झुके न जो, मिटे न जो,
हम वो इंकलाब हैं, जुल्म का जवाब हैं।
हर शहीद का, गरीब का, हमी तो ख्वाब हैं ॥
लड़ रहे हैं इसलिए कि, प्यार जग में जी सके
आदमी का खून, कोई आदमी न पी सके ।
मालिकों, मालिकों मजदूर के, नौकरों हजूर के फर्क को
मिटायेंगे, समानता को लायेंगे॥
मानते नहीं हैं फर्क हिन्दू-मुसलमान का
जानते हैं रिश्ता इंसान से इंसान का
धर्म के, धर्म के, देश के भाषा और भेष के
द्वन्द्व को मिटायेंगे और एकता लायेंगे॥
मानते नहीं हैं हुक्म जुल्मी हुक्मराम
युद्ध आज चल रहा है आदमी हैवान का
सत्य की, संभाल ढाल अहिंसा की ले मशाल
एकता के जोर पे हर जुल्म से लड़ जायेंगे॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



## ३९. गंगा की कसम

गंगा की कसम, यमुना की कसम ये ताना बाना बदलेगा।
तू खुद तो बदल, तू खुद तो बदल, तब तो ये जमाना बदलेगा॥
रावी की रवानी बदलेगी, सतलुज का मुहाना बदलेगा।
गर शौक में तेरे जोश रहा, तस्वीह का दाना बदलेगा॥
ये भूखा नुमायश भूखो की ये उजड़े चमन बेकारों के।
जूठन के सड़क पर जीते हुए, शहजादे ये सुर्ख बहारों के।
होली खून पसीनों की, नीलामी हुस्न हसीनों की,
बेज़ार न हो, बेज़ार न हो ये सारा फ़साना बदलेगा॥
ऊँचे हैं इतने महल कि हर इन्सान का जीना मुश्किल है।
मंदिर मस्जिद की बस्ती में, ईमान का बचना मुश्किल है॥
रफ्तार जरा कुछ और बढ़ा, आवाज जरा कुछ और चढ़ा,
शीशा ही नहीं साकी ही नहीं, सारा मयखाना बदलेगा॥
सूरज की मशालें थामे हुए जिस दम को जवानी चलती है।
पूरब से लगाकर पश्चिम तक सबकी तकदीर बदलती है।
तूफान को आंख दिखाने दे, बिजली को तड़क कर आने दे,
महफ़िल ही नहीं, मज़लिस ही नहीं, पूरा तराना बदलेगा॥

## ४०. आचार बदलता नहीं अगर

आचार बदलता नहीं अगर, सरकार बदलकर क्या होगा ?
बेसुरी रही झंकार अगर, फिर तार बदलकर क्या होगा ?
गर बदली नहीं व्यवस्था तो नेतृत्व बदलकर क्या होगा ?
भूले-भटके गुमराहों को नेता की शय्या मिलती है
बस इसीलिए तो जब चाहे शासन की गद्दी हिलती है।
जनमत की मची दुहाई है पर जनता लूटी जाती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अधिकारी राज्य चलाते हैं, भूखी जनता चिल्लाती है।
कर्तव्य बदलता नहीं अगर, अधिकार बदलकर क्या होगा?
आचार बदलता नहीं अगर, सरकार बदलकर क्या होगा?
गर बदली नहीं व्यवस्था तो नेतृत्व बदलकर क्या होगा?
पीढ़ी दर पीढ़ी माँग रही है, जीने को रोजी-रोटी दो।
रहने को तो झोपड़ी सही तन ढँकने को लँगोटी दो।
नकली नेता के कानों तक आवाज नहीं जा पाती है।
आजादी धोखेबाजों के हथकंडों में पछताती है।
जब खुद माँझी ही पागल हो पतवार बदलकर क्या होगा?
आचार बदलता नहीं अगर सरकार बदलकर क्या होगा?
गर बदली नहीं व्यवस्था तो नेतृत्व बदलकर क्या होगा?
जो जातिवाद का पोषक हो, वह क्या निर्माण करायेगा?
भ्रष्टाचारी शासक कैसे जनमत मजबूत करायेगा?
जो खुद प्यासा हो प्यासों की वह कैसे प्यास बुझायेगा?
करुणा ही नहीं भला जिसमें पर-हित कैसे कर पायेगा?
तृष्णा यदि मन में भरी हुई, उद्गार बदलकर क्या होगा?
आचार बदलता नहीं अगर सरकार बदलकर क्या होगा?
गर बदली नहीं व्यवस्था तो नेतृत्व बदलकर क्या होगा ?
नेतृत्व बदलने के पहले मन बदले यही जरूरी है
देखना यही है जनता से, नेता की दूरी कितनी है।
जनतंत्र मंच की चीज नहीं इसको जन-जन तक लाना है।
नेता बनने से अच्छा तो जनसेवी ही कहलाना है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



# ४१. उठी लोक-मानस में आँधी

उठी लोक-मानस में आँधी निहारो,
तुम्हें जो गगन से धरा पे उतारे।
क्षितिज लाल होता चला जा रहा है,
तुम्हें तो प्रकृति की छटा जँच रही है,
दबी दीन आहों की ज्वाला धधककर,
रुचिर क्रान्ति की नव घटा रच रही है।
अभी पात पीले ही केवल झड़े हैं,
कहीं आगे चलकर न जड़ से उखाड़े॥ तुम्हें.....
दलित और शोषित जगी भावनाएँ,
तुम्हारे विभव के भवन हिल रहे हैं,
स्वयं अपने ऊँचे कंगूरे झुकाकर,
झोपड़ियों से जा-जा गले मिल रहे हैं।
उजड़ भी गये और सूने पड़े हैं,
खड़े मार्ग में ये जो सीना उभाड़े॥ तुम्हें.....
धरा पे कहाँ और क्या बीतती है,
तुम्हें क्या पता तुम बने व्योमचारी,
बुलन्दी के सपनों से फुर्सत नहीं है,
कहाँ देख पाती है आँखें तुम्हारी।
सुनो युग-चुनौती, न बर्बाद कर दें,
समय पर तुमअहें, कारनामे तुम्हारा॥ तुम्हें.....
किये हैं बहुत भूल उत्पात तुमने,
निजी सम्पदा के क्षणिक चोंचलों में,
भले आज जनमत न मुँह पर कहे कुछ,
खटकते बहुत हो बुरे, तुम दिलों में।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



फकत एक धक्के की बाकी कसर है,
समझ लो खड़े हो पतन के किनारे ॥ तुम्हें.....

—रामगोपाल दीक्षित

## ४२. सम्पूर्ण क्रांति होगी

सम्पूर्ण क्रान्ति होगी, सम्पूर्ण क्रान्ति होगी,
जो घन घटा घिरी है, हर्गिज न व्यर्थ होगी,
जो लू-लपट चली है, हर ओर वह लगेगी,
ज्वाला धधक रही जो हर ओर वह जलेगी,
जो आग जग गयी है, हर्गिज न सुप्त होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

जो चल रहा कुपथ पर, रथ खण्ड-खण्ड होगा,
पर क्रांति-यज्ञ अब तो, निश्चित अखण्ड होगा,
वातास शुद्ध होगा, खिड़की विमुक्त होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

बन्दूक की नली पर जनतन्त्र पल रहा है,
लाशें बिछा युवा की शासन मचल रहा है,
यह तन्त्र ध्वस्त होगा, यह रीति ध्वस्त होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

यह सिंह-नाद जाग्रत जन का नहीं रुकेगा,
आँधी नहीं रुकेगी यौवन नहीं झुकेगा,
नूतन विहान होगा किरणें नवीन होंगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

यह क्रांति शुद्ध की है संघर्ष है स्वयं से,
यह क्रांति सत्य की है संघर्ष है अनय से,
बल आत्म-तेज का है मृदु याचना न होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

हर व्यक्ति की प्रतिष्ठा समुदाय की सुरक्षा,
कल्याण धर्मिता से शोभित नवीन शिक्षा,
ऐसा विधान होगा, ऐसी सुनीति होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दुर्नीति पर खड़ी हर दीवाल अब ढहेगी,
जो रक्त पी रही है वह सत्ता नहीं रहेगी,
मन्दिर नया बनेगा, प्रतिमा नवीन होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

हर जुल्म बन्द होगा हर धाँधली रुकेगी,
जनता जगीं रही तो सत्ता स्वयं झुकेगी,
चिन्तन स्वतन्त्र होगा वंशी अभीत होगी,
तम पर प्रकाश की जय होगी अवश्य होगी ॥ सम्पूर्ण० ॥

(१९७५-७६ के आपात काल में सर्वाधिक गायी जानेवाली कविता।)

(ग) समूह-गीत

## ४३. हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन।
हो-हो, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।
हम चलेंगे साथ-साथ, डाल हाथों में हाथ।
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन,
हो-हों, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।
होगी शांति चारों ओर, होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर एक दिन।
हो-हो, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


होगी जीत सच्चाई की, होगी जीत सच्चाई की।
होगी जीत सच्चाई की, एक दिन।
हो-हो, मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

## ४४. एकला चलो रे

जदि तोर डाक सुने केऊ ना आसे तबे एकला चलो रे
एकला चलो एकला चलो एकला चलो एकला चलो रे।
जदि केऊ कथा ना कोय, ओरे ओरे जो अभागा, केऊ कथा न कोय
जदि सबाई थाके मुख फिराये सबाई करे भय
तबे पुरान खुले ओ तुई मुख फुटे तो मनेर कथा एकला बोलो रे॥
जदि सबाई फिरे जाय, ओरे ओरे ओ अभागा, सबाई फिरे जाय
जदि गहन पथे जाबार काले केऊ फिरे ना चाय
तबे पथेर-कांटा ओ तुई रक्त माखा चरण तले एकला चलो रे
जदि आलो ना धरे, ओरे ओरे ओ अभागा, आलो ना धरे
झड़ बादले आँधर राते द्वार देय धरे
तब ब्रजानाले आपन बुकेर पाजर ज्वालिये निये एकला चलो रे॥

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वंदना

# ४५. हे नम्रता के सम्राट

हे ! नम्रता के सागर।
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी।
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित इस सुन्दर देश में
तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुलादिल दे,
तेरी अपनी नम्रता दे,
हिन्दुस्तान की जनता से
एक रूप होने की शक्ति और उत्कण्ठा दे।
हे भगवन् ! तू कभी मदद के लिए आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर, तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे, कि सेवक और मित्र के नाते
जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं,
उससे कभी अलग न पड़ जायें।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना, ताकि,
इस देश को हम ज्यादा समझे और ज्यादा चाहें।

—महात्मा गांधी

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःख-तप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

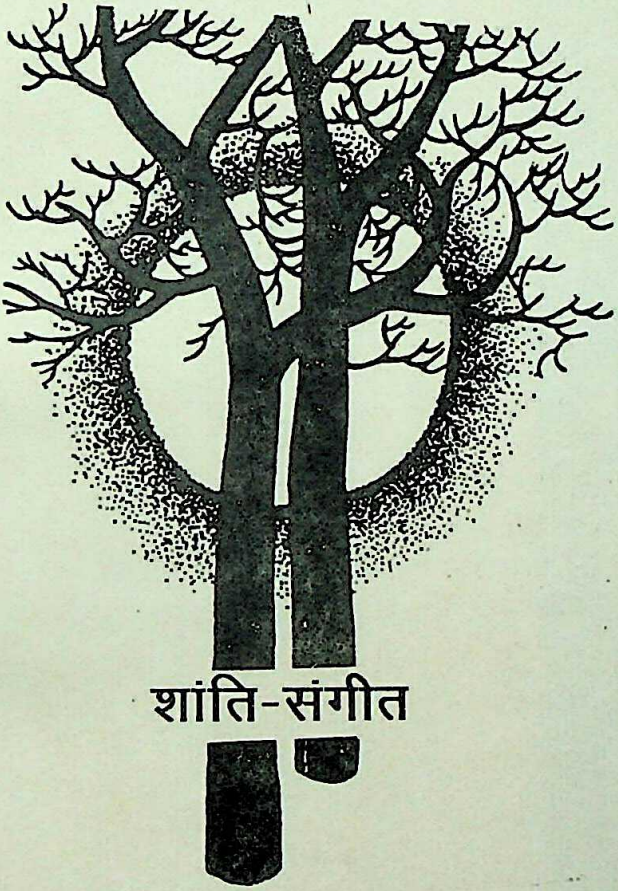

# शांति-संगीत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आ

भरत